

सविलि सेवक एवं सोशल मीडिया

मेन्स के लिये:

सविलि सेवकों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित पक्ष और वपिक्ष।

चर्चा में क्यों?

सविलि सेवकों (सेवानवृत्त एवं सेवारत) के सोशल मीडिया एकाउंट्स पर कुछ प्रकार के प्रतिक्रियाओं की वकालत की गई है, क्योंकि ये उनके कार्य में बाधा डाल सकते हैं।

सविलि सेवकों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित पक्ष और वपिक्ष:

■ पक्ष:

- आम लोगों तक आसान पहुँच:
 - सोशल मीडिया के माध्यम से सविलि सेवक तक आम लोगों की पहुँच आसान हो गई है और सार्वजनिक सेवा वितरण के मुद्दों को सोशल मीडिया के उपयोग के माध्यम से हल किया जा रहा है।
- सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण:
 - सोशल मीडिया ने लंबे समय से अपारदर्शी और दुर्गम मानी जाने वाली संस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण किया है।
- जागरूकता में वृद्धि:
 - सोशल मीडिया के माध्यम से सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ी है।
- सार्वजनिक सूचना का तीव्र प्रसार:
 - यह नौकरशाहों को राजनीतिक रूप से तटस्थ रहते हुए सार्वजनिक सूचना को पहुँचाने और जनता के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।
 - सोशल मीडिया का उपयोग उस स्थिति में सविलि सेवकों के मध्य के अंध आज़ाकारिता को कम करने में मदद करता है जब राजनेता नौकरशाहों से अपनी सुविधा/नज़ी हति के अनुसार सलाह प्राप्त करना चाहते हैं।

■ वपिक्ष:

- अनामकिता:
 - अनामकिता भारत सहित वेस्टमिस्टर नौकरशाही का प्रमुख आधार रही है।
 - लोक सेवा में अनामकिता वह परंपरा है जिसमें मंत्री और संसद जनता को सरकारी कार्यों के लिये उन्लोक सेवकों का नाम लिये बगैर जवाब देते हैं जिन्होंने उस कार्य संबंधित सलाह दी थी या प्रशासनिक कार्रवाई की थी।
 - एक ऐसी दुनिया में जहाँ सार्वजनिक शासन वाली दुनिया में गोपनीयता बनाए रखना है शासन के आदर्शों के प्रति प्रतिकूलता है।
- मूल्यों का प्रभुत्व:
 - इसके अलावा, सार्वजनिक नीति निर्माण में तथ्यों की तुलना में मूल्य अधिक प्रभावी होते जा रहे हैं।
 - सार्वजनिक नीति के दायरे में फ़ेक नयुज़ और व्यवस्थित प्रचार के कारण मूल्यों और तथ्यों दोनों को नया रूप दिया जा रहा है।
 - नतीजतन नौकरशाही, जैसे तथ्यों के संग्रह और सार्वजनिक मूल्यों के प्रतीक के रूप में काम करने की उम्मीद है, से नज़ी तौर पर शासन करने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिये।
- सोशल मीडिया का संस्थानीकरण:
 - कई वेस्टमिस्टर सिस्टम (केंद्रीय नगर/आधिकारिक तौर पर शहर) आधारित देशों में सोशल मीडिया का उपयोग धीरे-धीरे संस्थागत हो रहा है।
 - में बरेकसटि के दौरान कई सविलि सेवकों ने राजनीतिक रूप से तटस्थ रहते हुए भी सोशल मीडिया के उपयोग के माध्यम से सार्वजनिक बहस को आकार दिया।
 - भारत में सविलि सेवकों ने डिजिटल नौकरशाही के इस पहलू पर विचार नहीं किया है।
 - सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के माध्यम से गुमनामी और अपारदर्शिता को पहले ही कम कर दिया गया है, लेकिन इसके बावजूद वे प्रमुख विशेषताएँ बनी हुई हैं।
- पहुँच और जवाबदेही:

- भारत में नौकरशाही में **सोशल मीडिया की भूमिका ने अलग दशा ले ली है।**
- सविलि सेवकों द्वारा **आत्म-प्रचार के लिये सोशल मीडिया का उपयोग किया जा रहा है।**
- अपने चुनदा पोस्ट और अपने सोशल मीडिया प्रशंसकों द्वारा इन पोस्टों के प्रचार के माध्यम से सविलि सेवक अपने प्रदर्शन का आख्यान करते हैं, जो पहुँच और जवाबदेही के नाम पर उचित है।
- जन चेतना में यह गलत धारणा बन गई है कि सोशल मीडिया सविलि सेवकों तक पहुँचने और उन्हें जवाबदेह बनाने का एक तरीका है।

आगे की राह

■ सार्वजनिक नीतियों में सुधार:

- नौकरशाहों को **सार्वजनिक नीतियों में सुधार के लिये सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिये।** यदि वे सोशल मीडिया का उचित उपयोग नहीं करते हैं, तो स्वतंत्र सलाहकार के रूप में उनकी भूमिका खतरे में पड़ जाती है।
- सोशल मीडिया ने पहुँच और जवाबदेही में सुधार किया है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सविलि सेवकों को अपनी इच्छति जानकारी साझा करने एवं जो वे चाहते हैं उन्हें प्रतिक्रिया देने के लिये लाभदायक है।
- यह कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं है जहाँ **पहुँच और जवाबदेही उपचार की एकरूपता पर आधारित हो।**
- सोशल मीडिया की जवाबदेही संस्थागत और नागरिक केंद्रित जवाबदेही का कोई विकल्प नहीं है।
- वास्तव में कार्यालय समय के दौरान सोशल मीडिया का उपयोग करना और इसे उचित ठहराना आंशिक रूप से अनैतिक है जब लंबी दूरी से आने वाले कुछ लोग कार्यालय के बाहर इंतजार कर रहे हैं।

■ तथ्यों को सामने लाने के लिये सोशल मीडिया का उपयोग:

- अब समय आ गया है कि न केवल सोशल मीडिया का इस्तेमाल तथ्यों को सामने लाने के लिए किया जाना चाहिये बल्कि उपलब्धियों का प्रदर्शन भी किया जाना चाहिये।
- यह नकारात्मकता का मुकाबला करने के लिये व्यापक संदर्भ का एक हिससा है जो कव्यापक होती जा रही है।
 - #Nexusofgood सविलि सेवकों और समग्र रूप से समाज में उनके द्वारा किये जा रहे अच्छे काम को समझने, उसकी सराहना करने और उसके मूल्यांकन का एक कृष्ण है।
- वचिर नकारात्मकता के लिये एक वैकल्पिक कथा विकसित करना है जो सोशल मीडिया और संचार के अन्य माध्यमों में व्यापक हो रही है। इस तरह की नकारात्मकता बड़ी संख्या में लोगों के वचिरों और कार्यों को प्रभावित कर रही है।

स्रोत: इकॉनोमिक टाइम्स

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/civil-servants-and-social-media>

